International Journal of Humanities and Social Science Research
www.socialsciencejournal.in
ISSN: 2455-2070
Received: 02-03-2021, Accepted: 03-04-2021, Published: 04-05-2021
Volume 7, Issue 3, 2021, Page No. 08-14

बांदा जिला के समन्वित ग्रामीण विकास में चक्रीय विपणन केन्द्रों का योगदानः एक भौगोलिक अध्ययने

दिनेश बाबू
शोधार्थी, शा0टी0आर0एस0 कालेज, रीवा, मध्य प्रदेश, भारत

सारांश
सामाजिक आर्थिक एवं भौगोलिक विकास की वैसी प्रक्रिया जिसमें विकास के अलग–अलग क्षेत्र एवं प्रक्रियायें आपस में सम्बन्धित हो समन्वित ग्रामीण कहलाता है। समन्वित ग्रामीण विकास के अन्तर्गत क्षेत्रीय विकास का सम्बन्ध ग्रामीण विकास के साथ–साथ जुड़ा होता है। फलतः इसका लक्ष्य एवं स्वरूप बहुत व्यापक होता है। जिला स्तर पर लोगों की सक्रिय भागीदारी के फलस्वरूप स्थानीय संसाधनों की आवश्कताओं एवं प्राथमिकताओं के आधार पर सम्पूर्ण जिला के विकास की रणनीतियॉ निर्धारित कर उन्हें क्रियान्वित करने की आवश्यकता होती है। प्रस्तुत शोध पत्र में पूर्व से चलने वाली योजनाओं की समीक्षा की जायेगी तथा संतुलित विकास के लक्ष्य को प्राप्त करने हेतु एक योजना निर्माण भी की जायेगी।

मूलशब्दः सामाजिक आर्थिक विकास, चक्रीय विपणन केन्द, ग्रामीण विकास, समन्वित ग्रामीण विकास

प्रस्तावना
अल्प विकसित एवं विकासोन्मुख अर्थतंत्र में चक्रीय विपणन केन्द्र आर्थिक विनिमय का एकमात्र माध्यम नहीं होते हैं वरन् यह क्षेत्र के सामाजिक आर्थिक विकास को भी प्रभावित करते हैं। ऐसे विपणन केन्द्र अत्यधिक चक्रीय (आवर्ती) होते हैं। आर्थिक क्रिया–कलाप मानव के विकास का आवश्यक अंग है। आर्थिक क्रियाओं का संगठन मनुष्य सोच समझकर योजनाबद्ध ढंग से करता है और अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति करते है। मनुष्य की आवश्यकताएँ अनन्त होती हैं। अतैव आर्थिक क्रिया–कलापों का रूप भी जटिल होता है। आर्थिक क्रियाओं की अभिव्यक्ति उत्पादन एवं उपभोग में होती है। उत्पादन एवं उपभोग को जोड़ने वाली कड़ी विनिमय एक प्रक्रिया है जिसकी अभिव्यक्ति विपणन में होती है। विपणन विनमय का फलीभूत रूप है तथा विपणन भूगोल विनमय क्रिया या लेन–देन का भूगोल है। "Marketing geography is the science of marketing'' विनिमय एक आर्थिक क्रिया है परन्तु यह सामाजि, सांस्कृतिक विज्ञान एवं तकनीक से अभिन्न रूप से जुड़ी है, मनुष्य के सामाजिक कार्यो में विविधता पायी जाती है यह विविधता समाज के स्थल उत्पादों, मापदण्डों, विचारों इत्यादि में प्रकट होती है। समाज अपने सम्बन्ध बढ़ाने हेतु परस्पर आदान–प्रदान करते है। वस्तु विनिमय की प्रक्रिया उपहारों के लेन–देन से जुड़ी है तथा क्रमबद्ध विपणन ने आधुनिक व्यापार का रूप ग्रहण किया है। मानव की आर्थिक गतिविधियॉ भिन्न है। औद्योगिक भूगोल, कृषि भूगोल, विपणन भूगोल व परिवहन भूगोल इत्यादि आर्थिक भूगोल की शाखाएँ है।विपणन भूगोल को 1972 में मांट्रियल में समन्न 22 आई0जी0यू0 कांग्रेस में एक स्वतंत्र विषय के रूप मान्यता प्राप्त हुई इसी समय "Market distribution sestany'' जिसे बाद में "Market place Exchange system'' के नाम से जाना जाता है। प्रस्तुत अध्ययन ''बांदा जिला के समन्वित ग्रामीण विकास में चक्रीय विपणन केन्द्रों का योगदानः एक भौगोलिक अध्ययन''में विपणन केन्द्रों का विकासात्मक अध्ययन किया गया है।

अध्ययन का उद्देश्यः प्रस्तुत शोध का प्रमुख उद्देश्य बांदा जिला (उ0प्र0) के चक्रीय विपणन केन्द्रों का सामाजिक आर्थिक विकास पर प्रभाव का अध्ययन किया गया है। चक्रीय विपणन केन्द्रों का नियोजन एवं प्रबंधन करके चक्रीय विपणन केन्द्रों का विकास का प्रारूप तैयार किया गया है। इसी प्रकार विपणन केन्द्र प्रस्तुत अध्ययन के मुख्य केन्द्र है इसलिए चक्रीय विपणन केन्द्रों के उद्देश्य इस प्रकार हैं–

1. चक्रीय विपणन केन्द्रों का सामाजिक आर्थिक विकास पर प्रभाव का अध्ययन करना।
2. अध्ययन क्षेत्र के विकास में चक्रीय विपणन केन्द्रों की भूमिका का विश्लेषण करना।

परिकल्पना
चक्रीय विपणन केन्द्र मात्र सेवा केन्द्रों का कार्य ही सम्पादित नही करते परन्तु यह सूचनाओं के वितरण केन्द्र के रूप में भी जाने जाते हैं। भौगोलिक,आर्थिक, राजनैतिक एवं सांस्कृतिक विकास में चक्रीय विपणन केन्द्रों का महत्वपूर्ण योगदान रहता है। प्रस्तुत अध्ययन का अवलोकन उपरान्त उक्त परिकल्पाएँ निम्नानुसार हैः–

1. जिन क्षेत्रों में कृषि क्षेत्र अधिक होगा वहॉ विपणन केन्द्रों के संख्या की अधिकता होगी।
2. बाजार आकारिकी जितनी जटिल होगी उसके कार्य क्षेत्र में वृद्धि होगी।
3. यातायात साधनों की उपलब्धता चक्रीय विपणन केन्द्रों के विस्तार का आधार होगा।

विपणन केन्द्रों की संख्या में वृद्धि के साथ क्रेता एवं विक्रेताओं के व्यवहार में परिवर्तन होगा।

अध्ययन की विधि
प्रस्तुत अध्ययन में प्राथमिक तथा द्वितीयक दोनों प्रकार के आंकड़ों का एकत्रीकरण किया गया है। शोध क्षेत्र का सर्वेक्षण कार्य जिले से चयनित 28 चक्रीय विपणन केन्द्रों का जनगणना 2011 के अनुसार किया गया है। जिला गजेटियर, जिला जनगणना पुस्तिका, जिला सांख्यिकी पत्रिका, भारतीय सर्वेक्षण विभाग के धरातल पत्रक, विभिन्न ग्रंथालय एवं प्रकाशित तथा अप्रकाशित रचनाओं के माध्यम से किया गया है।

अध्ययन क्षेत्र
बांदा जिला भौतिक दृष्टि से पर्वतीय पठारी एवं मैदानी क्षेत्र का मिश्रित रूप है। भौगोलिक दशाओं की अनुकूलता होते हुए भी यह जिला आर्थिक दृष्टि से अत्यन्त पिछड़ा हुआ है। अध्ययन क्षेत्र मुख्यतः कृषि पर आधारित है अतैव चक्रीय विपणन केन्द्रों की क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका है। बांदा जिला की भौगोलिक स्थिति 24a 55' से 24a 55' उ0 अक्षांश तथा 80 7' से 80a 34' पूर्वी देशान्तर के मध्य स्थिति है। बांदा जिला पूर्व से पश्चिम की ओर लगभग 75 कि0मी0 एवं उत्तर से दक्षिण की ओर 60 कि0मी0 में फैला हुआ है।

इसकी समुद्र सतह से ऊँचाई 123 मीटर है। इसका सम्पूर्ण भौगोलिक क्षेत्रफल 4460 वर्ग किमी0 है। जनगणना 2011 के अनुसार बांदा जिले की कुल जनसंख्या 1799410 है। बांदा जिले की कुल 8 विकास खण्डों में चक्रीय विपणन केन्द्रों में से अध्ययन के लिए कुल 52.83 प्रतिशत चक्रीय विपणन केन्द्रों का किया गया है। प्रश्नावली के माध्यम से 28 विपणन केन्द्रों में उपस्थित क्रेता तथा विक्रेताओं का 5 प्रतिशत सर्वेक्षण किया है।

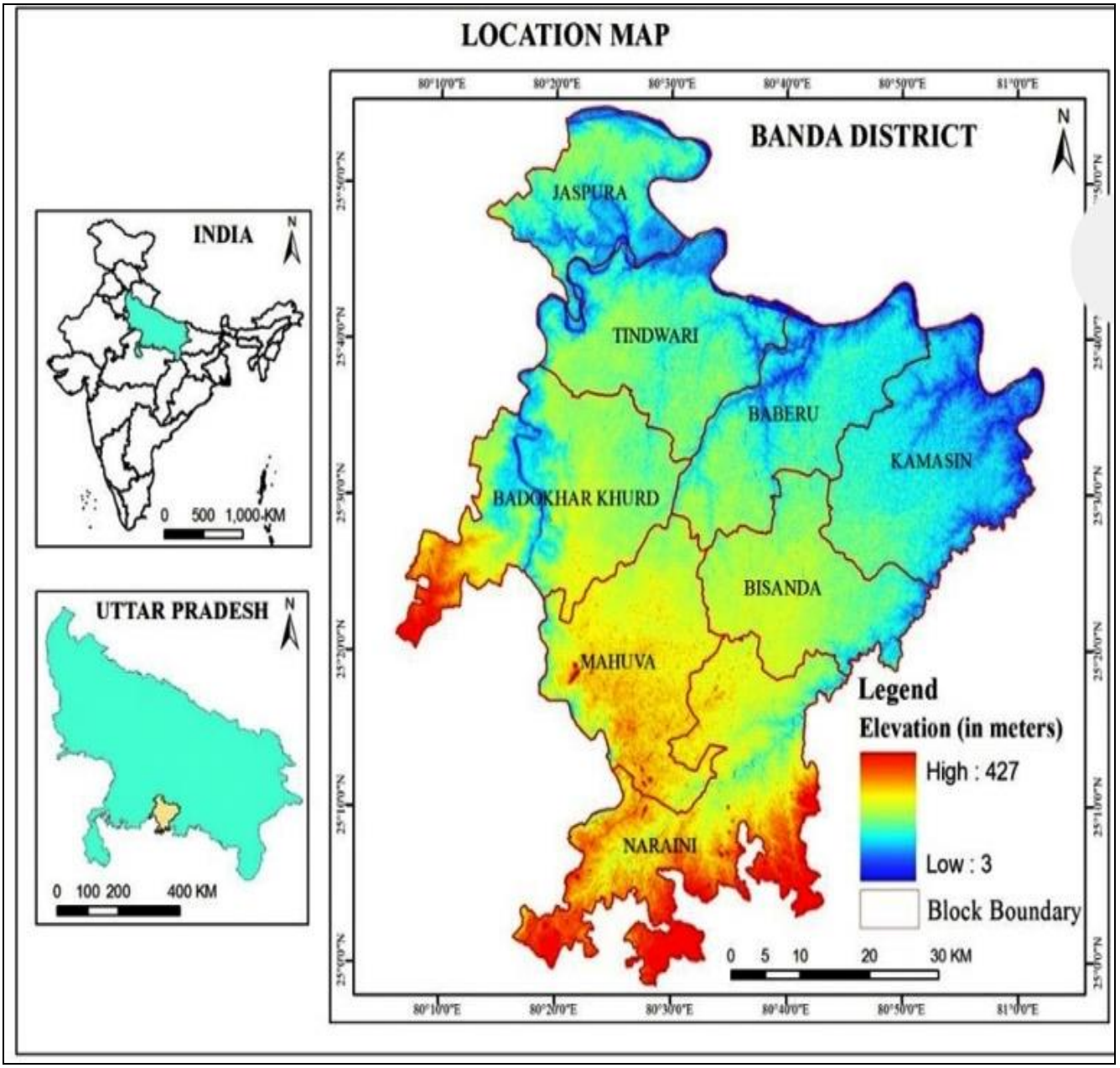

विश्लेषण एवं निष्कर्षः बांदा जिला में 697 गांवों हैं अतः जिले के सम्पूर्ण विकास के लिए ग्रामीण क्षेत्र का विकास महत्वपूर्ण है। ग्रामीण विकास की प्रक्रिया को अनदेखा कर समन्वित विकास सम्भव नही हैं अतः अध्ययन क्षेत्र के सम्पूर्ण विकास के ग्रामीण विकास आवश्यक है। समन्वित ग्रामीण विकास दोनों प्रकारों के समन्वय–प्रकार्यात्मक तथा स्थानिक के लिए प्रयुक्त होता है। प्रकार्यात्मक आर्थिक व सामाजिक क्रियाओं से है जो लोगों के जीवन को प्रभावित कर स्वास्थ्य, शिक्षा, कृषि, उद्योग तथा हमारे जीवन के दिन–प्रतिदिन के अन्य पक्ष एक दूसरे पर अतिव्याप्त होते हैं। समन्वित विकास का दूसरा महत्वपर्ण आयाम स्थानिक है। सभी प्रकार की आर्थिक व सामाजिक क्रियायें धरातल के किसी स्थान पर की जाती है। वे जहॉ पर अवस्थित होती है, उनमें समन्वित क्षेत्र के रहवासी अवश्य प्रभावित होते हैं। अतः समन्वित विकास की प्रक्रिया में प्रकार्यात्मक तथा स्थानिक दोनों प्रकारों के समन्वयों को स्थापित करने का प्रयास किया जाता है। 1965 में पहली बार भारतीय नियोजन में समन्वित विकास संकल्पना की शुरूआत की गई।

समन्वित ग्रामीण विकास में चक्रीय विपणन केन्द्रों का महत्वपूर्ण योगदान है। अध्ययन क्षेत्र के सामाजिक आर्थिक विकास एवं जनसमुदाय की दशा में वांछनीय सुधार के लिए समन्वित ग्रामीण विकास की योजना तैयार कर समायोचित करना है। जिससे विपणन केन्द्रों को जनसमुदाय के समीप विनमय प्रणाली को प्रदान करने का प्रयास किया गया है। इस अध्ययन में बांदा जिले में समन्वित ग्रामीण विकास में चक्रीय विपणन केन्द्रों के योगदान में बल दिया गया है।

(1.) शैक्षणिक सुविधाएॅः किसी भी क्षेत्र सामाजिक आर्थिक विकास के लिए शैक्षणिक सुविधाएॅ आधारभूत तत्व है। जिससे समन्वित ग्रामीण विकास सम्भव है।बांदा जिला में आठ विकास खण्ड है जिसमें से नरैनी विकास खण्ड में सर्वाधिक 6 चक्रीय विपणन केन्द्रों का आयोजन होता है जिसमें सर्वाधिक शैक्षणिक सुविधाएॅ उपलब्ध है। वहीं न्यूनतम विपणन केन्द्रों की संख्या कमासिन विकास खण्ड में एकमात्र है जिसमें सबसे कम शैक्षणिक सुविधाएॅ पायी जाती है। अतः अध्ययन क्षेत्र के जिस विकास खण्ड में विपणन केन्द्रों की संख्या सर्वाधिक है वहॉशैक्षणिक सुविधाएॅ भी अत्यधिक है। समन्वित ग्रामीण विकास में चक्रीय विपणन केन्द्रों का प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से सहायक है।

बांदा जिला में शैक्षिक सुविधाएँ वर्ष 2017–18

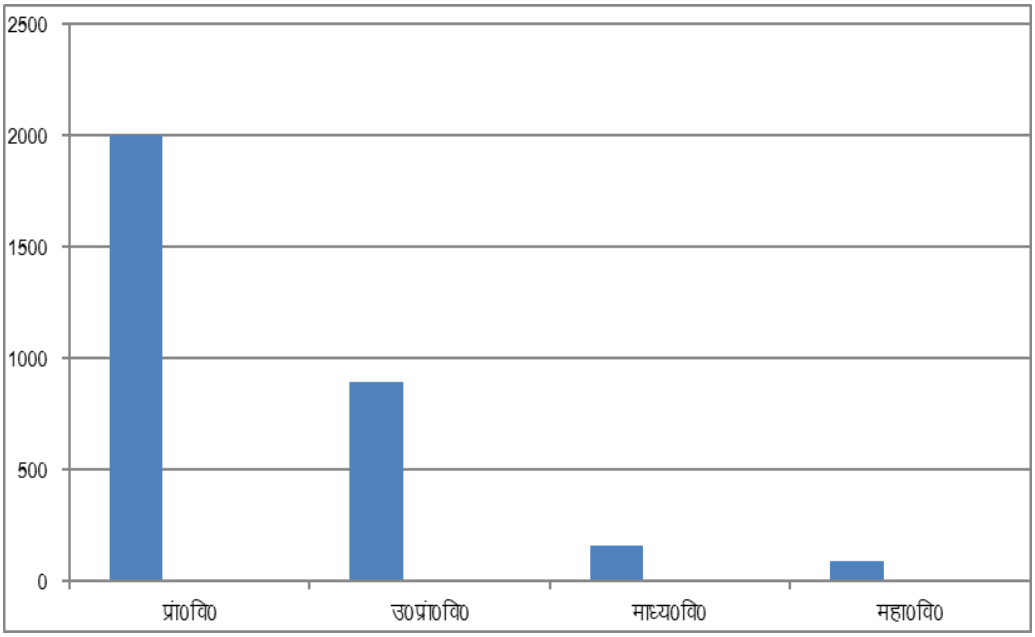

(2.) स्वास्थ्य सुविधाएँः अध्ययन क्षेत्र के निवासियों की प्रमुख समस्या स्वास्थ्य में गिरावट है। यहॉ जनसंख्या वृद्धि, जागरूकता की कमी तथा आधुनिकीकरण का अभाव इत्यादि के कारण असाध्य रोगों एवं बिमारियों जैसे भयंकर परिणामों को भुगतना पड़ता है। जिले के विभिन्न ग्रामीण–नगरीय स्थलों में चक्रीय विपणन केन्द्रों के आयोजन से स्वास्थ्य सुविधाएँ, प्राकृतिकक दवाएँ, जड़ी बूटियॉ, औसधियॉ तथा वैद्य इत्यादि से विकास में तीवृता आयी है।

बांदा जिला में स्वास्थ्य सुविधाए वर्ष 2017–18

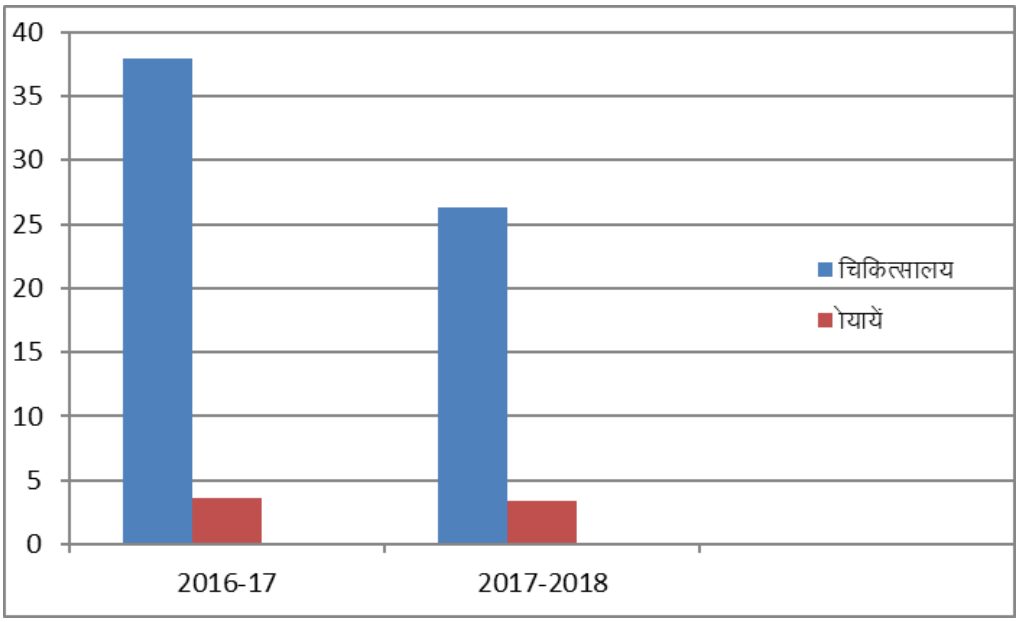

(3.) परिवहन एवं संचार सेवाएँः परिवहन जाल सामाजिक आर्थिक विकास की धमनियों के रूप में कार्य करता है। इसके द्वारा सामाजिक एवं आर्थिक विकास का जीवन रक्त अनवरत प्रवाहित होता रहता है। परिवहन एवं संचार सुविधाएँ चक्रीय विपणन केन्द्रों के महत्वपूर्ण अंग होते हैं। चक्रीय विपणन केन्द्रों की स्थापना में भी परिवहन एवं संचार सुविधाओं का घनिष्ठ सम्बन्ध हैं। बांदा जिले में रेल परिवहन तथा सड़क परिवहन दोनो यातायात मार्गों की व्यवस्था है। अध्ययन क्षेत्र के मटौध, बांदा, खुरहण्ड तथा अतर्रा चक्रीय विपणन केन्द्रों में रेल एवं सड़क मार्ग पाये जाते हैं जबकि अन्य सभी विपणन केन्द्रों में केवल सड़क यातायात की व्यस्था देखी गयी है। जिस विपणन केन्द्र में परिवहन मार्ग की समुचित व्यवस्था है उसका सामाजिक आर्थिकी विकास अत्यधिक हुआ है। बांदा जिला का धरातल पहाड़ी और पठारी होने के कारण असमतल है, यातायात के साधन अत्यल्प और अविकसित है।

(4.) मनोरंजन सुविधाएँः चक्रीय विपणन केन्द्रों के माध्यम से लोगों को विभिन्न मनोरंजन सुविधाओं का लाभ प्राप्त होता है। अध्ययन क्षेत्र में अखाडा, भजन–कीर्तन तथा पुस्तकालय इत्यादि मनोरंजन सुविधाएँ च चक्रीय विपणन केन्द्रों में पाये जाते हैं।

(5.) वित्त एवं सहकारिता सुविधाएँः वर्तमान में मानव के आर्थिक क्रिया–कलाप के लिए वित्त आवश्यकताओं की पूर्ति अत्यधिक बैकों के द्वारा होती है। अध्ययन क्षेत्र के कमासिन विकासखण्ड तथा जसपुरा विकासखण्ड बैंक एवं

सहकारिता व्यवस्था में अति पिछड़े ब्लाक में आते हैं। समन्वित ग्रामीण विकास बैंको एवं वित्त सुविधा के अभाव में सम्भव ही नहीं है। चक्रीय विपणन केन्द्रों का समन्वित ग्रामीण विकास में प्रत्यक्ष योगदान है। ग्रामीण बैंकों की स्थापना के पश्चात अध्ययन क्षेत्र में वित्तीय लेन–देन में सुधार हुआ है।

(6.) कृषिगत सुविधाएँः यह ग्रामीण विकास का अभिन्न अंग है। अध्ययन क्षेत्र में विभिन्न कृषिगत सहकारी समितियॉ जैसे उवर्रक, आवश्यक वस्तुएँ/तेल, चीनी, खाद्यान्न, इत्यादि सुविधाएँ पायी जाती हैं। जिनकी पूर्ति चक्रीय विपणन केन्द्रों के द्वारा की जाती है। कृषिगत सुविधाओं में बीज विकृय केन्द्र, उर्वरक विकय केन्द्र, कीटनाशक विकय केन्द्र, ग्रामीण गोदाम, शीत भण्डार तथा कृषि सेवा केन्द्र इत्यादि सम्मिलित है जो चक्रीय विपणन केन्द्रों के माध्यम से की जाती है जो चक्रीय विपणन केन्द्रों के अभिन्न अंग है।

बांदा जिला के चक्रीय विपणन केन्द्रों का खण्ड स्तरीय नियोजन

बांदा जिला को चार खण्डों में विभाजित कर चक्रीय विपणन केन्द्रों का खण्ड स्तरीय अध्ययन किया गया है। अध्ययन क्षेत्र के चक्रीय विपणन केन्द्रों का नियोजन एवं विकास के लिए के सम्पूर्ण क्षेत्रफल को चार बराबर खण्डों में (प्रथम भाग उ0पू0 खण्ड, द्वितीय भाग द0पू खण्ड, तृतीय भाग द0प0खण्ड तथा चतर्थ भाग उ0प0 खण्ड) रखा गया है। बांदा जिले में कुल 16 चक्रीय विपणन केन्द्र प्रस्तावित है।

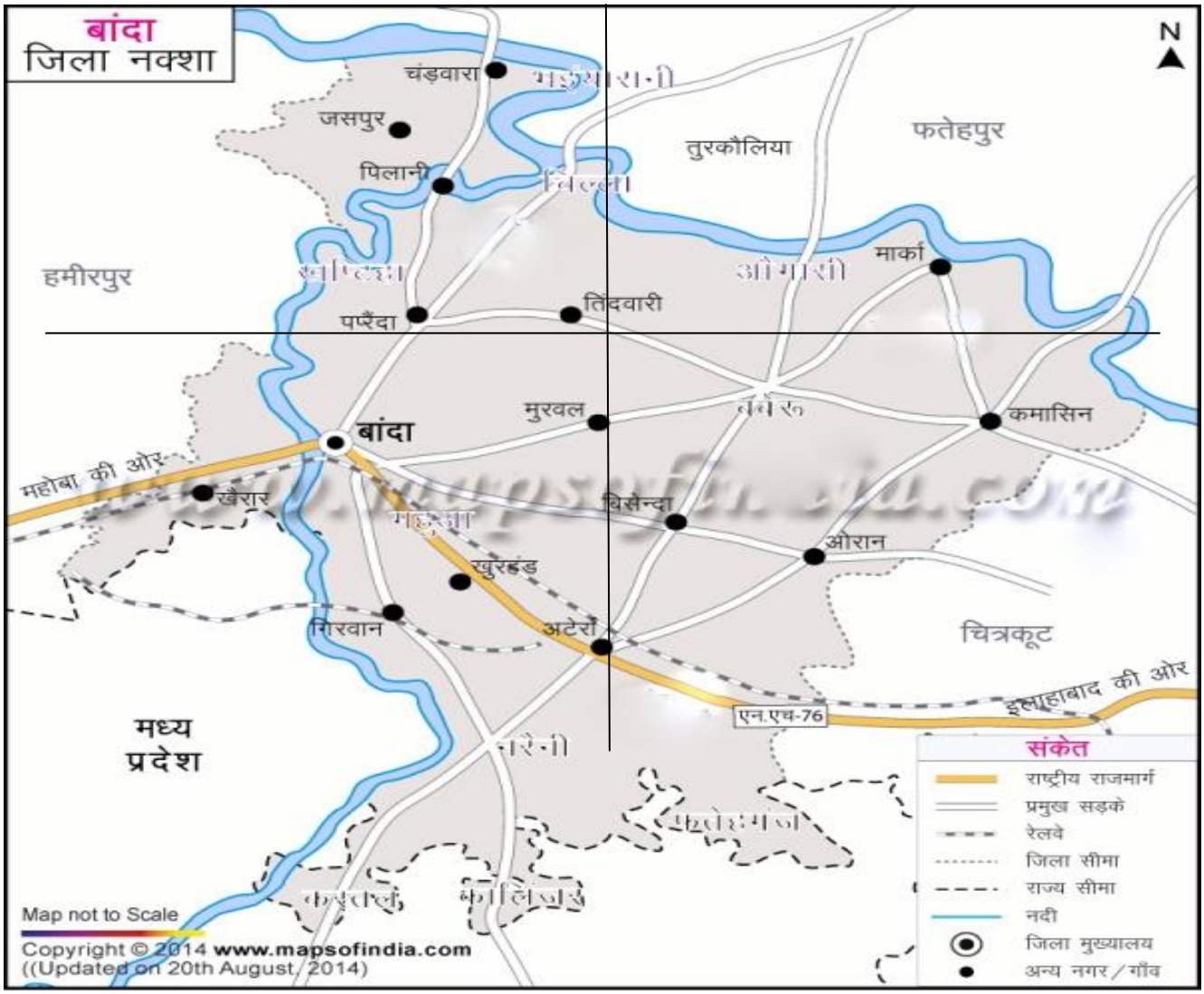

संकेतः– ० वास्तविक चकीय विपणन केन्द्र

प्रथम भागः उत्तरी–पूर्वी खण्डः प्रथम भाग में जिले के उ0पू0खण्ड के सभी चक्रीय विपणन केन्द्रों को सम्मिलित कर अध्ययन किया गया है। इस खण्ड में कुल 05 चक्रीय विपणन केन्द्र सम्मिलत हैं जो कुल चक्रीय विपणन केन्द्रों का 17.85 प्रतिशत हैं।

क्र.सं.	चक्रीय विपणन केन्द्रों का नाम	विकासखण्ड	प्रतिशत	प्रस्तावित चक्रीय विपणन केन्द्रों	विकासखण्ड
1	औगासी	बबेरू		विर्रावा	कमासिन
2	बबेरू	बबेरू		बीरा	कमासिन
3	मुरवल	बबेरू		चरका	कमासिन
4	कमासिन	कमासिन		बघेला	बबेरू
5	विसण्डा	विसण्डा			
योग	चक्रीय विपणन केन्द्रों की संख्या 05		17.85	योग	चक्रीय विपणन केन्द्रों की संख्या 04

द्वितीय भागः दक्षिणी–पूर्वी खण्डः अध्ययन क्षेत्र के द0पू0 खण्ड के अर्न्तगत 05 चक्रीय विपणन केन्द्र समाहित हैं जो जिले के सम्पूर्ण चक्रीय विपणन केन्द्रों का 17.85 प्रतिशत हैं। इस भाग में कुल 04 चक्रीय विपणन केन्द्र प्रस्तावित हैं जो वास्तविक चक्रीय विपणन केन्द्रों से अलग हैं।

क्र.सं.	चक्रीय विपणन केन्द्रों का नाम	विकासखण्ड	प्रतिशत	प्रस्तावित चक्रीय विपणन केन्द्रों का नाम	विकासखण्ड
1	ओरन	विसण्डा		बांला	विसण्डा
2	सिंहपुर	विसण्डा		गुढ़ा	नरैनी
3	अतर्रा	नरैनी		बदौसा	नरैनी
4	फतेहगंज	नरैनी		सढ़ा	नरैनी
5	कोर्रही	विसण्डा			
योग	चक्रीय विपणन केन्द्रों की संख्या 05		17.85	योग	चक्रीय विपणन केन्द्रों की संख्या 04

तृतीय भागः दक्षिणी–पश्चिमी खण्डः जिले के चारों खण्डों में द0प0 खण्ड में सर्वाधिक चक्रीय विपणन केन्द्र सम्मिलित हैं तथा सबसे कम (01 केवल एक) चक्रीय विपणन केन्द्र प्रस्तावित हैं। यहॉ कुल 28 चक्रीय विपणन केन्द्रों का 35.71 प्रतिशत विपणन केन्द्र पाये जाते हैं। इस भाग में केवल नंदवारा चक्रीय विपणन केन्द्र वि0ख0 महुआ में प्रस्तावित है।

क्र.सं.	चक्रीय विपणन केन्द्रों का	विकासखण्ड	प्रतिशत	प्रस्तावित चक्रीय विपणन केन्द्र	विकासखण्ड
1	मटौंध	बड़ोखर खुर्द		नंदवारा	महुआ
2	तिंदवारा	बड़ोखर खुर्द			
3	महुआ	महुआ			
4	विलगांव	महुआ			
5	खुरहण्ड	महुआ			
6.	शगिरवां	महुआ			
7.	शंकरबाजार	नरैनी			
8.	करतल	नरैनी			
9.	नरैनी	नरैनी			
चक्रीय विपणन केन्द्रों की सं. 09		35.71		चक्रीय विपणन केन्द्र सं. 01	

चतुर्थ भागः उत्तरी–पश्चिमी खण्डः खण्ड स्तरीय चक्रीय विपणन केन्द्रों के विभाजन में चतुर्थ अंतिम भाग उ0प0 खण्ड है जिसके अर्न्तगत कुल चयनित चक्रीय विपणन केन्द्रों का 28.57 प्रतिशत विपणन केन्द्र पाये जाते हैं। समन्वित ग्रामीण विकास के लिए इस खण्ड में 07 चक्रीय विपणन केन्द्र प्रस्तावित हैं।

क्र.सं.	चक्रीय विपणन केन्द्रों का नाम	विकासखण्ड	प्रतिशत	प्रस्तावित चक्रीय विपणन केन्द्रों	विकासखण्ड
1	बांदा	बड़ोखर खुर्द		खैरादा	बड़ोखर खुर्द
2	तिदंवारी	तिदंवारी		लुकतरा	बड़ोखर खुर्द
3	खप्टिहा कला	तिदंवारी		हथौड़ा	बड़ोखर खुर्द
4	पैलानी	तिदंवारी		बेंदा	तिदंवारी
5	चिल्ला	तिदंवारी		पपरेन्दा	तिदंवारी
6	जसपुरा	जसपुरा		अमारा कुटी	जसपुरा
7	सिंधनकला	जसपुरा		सिकहुला	जसपुरा
8	भुइंयारानी	जसपुरा			
योग	चक्रीय विपणन केन्द्रों की संख्या 08		28.57	योग	चक्रीय विपणन केन्द्रों की संख्या 07

बांदा जिला के वास्तविक एवं प्रस्तावित चक्रीय विपणन केन्द्रों का वृत्ताकार नियोजन
बांदा जिला के वास्तविक चक्रीय विपणन केन्द्रों का वृत्ताकार नियोजन

क्र.सं.	वृत्त	संख्या	चक्रीय विपणन केन्द्रों का नाम	प्रतिशत
1	अर्न्तवर्ती	06	विसण्डा	21.42
2	अर्न्तवर्ती	–	ओरन	–
3	अर्न्तवर्ती	–	अतर्रा	–
4	अर्न्तवर्ती	–	खुरहण्ड	–
5	अर्न्तवर्ती	–	महुआ	–
6	अर्न्तवर्ती	–	विलगांव	–
7	मध्यवर्ती	11	तिंदवारी	39.29
8	मध्यवर्ती	–	बबेरू	–
9	मध्यवर्ती	–	औगासी	–
10	मध्यवर्ती	–	मुरवल	–
11	मध्यवर्ती	–	कमासिन	–
12	मध्यवर्ती	–	सिंहपुर	–
13	मध्यवर्ती	–	नरैनी	–
14	मध्यवर्ती	–	गिरवां	–
15	मध्यवर्ती	–	तिदंवारा	–
16	मध्यवर्ती	–	बांदा	–
17	मध्यवर्ती	–	कोर्रही	–

18	बाह्यवर्ती	11	जसपुरा	39.29
19	बाह्यवर्ती	–	भुइंयारानी	–
20	बाह्यवर्ती	–	सिंधनकला	–
21	बाह्यवर्ती	–	चिल्ला	–
22	बाह्यवर्ती	–	पैलानी	–
23	बाह्यवर्ती	–	खप्टिहा कला	–
24	बाह्यवर्ती	–	फतेहगंज	–
25	बाह्यवर्ती	–	कालिंजर	–
26	बाह्यवर्ती	–	करतल	–
27	बाह्यवर्ती	–	शंकर बाजार	–
28	बाह्यवर्ती	–	मटौंध	–
	कुल वास्तविक चक्रीय विपणन केन्द्रों सं0 28			100

बांदा जिला के वास्तविक एवं प्रस्तावित चक्रीय विपणन केन्द्रों का वृत्ताकार नियोजन

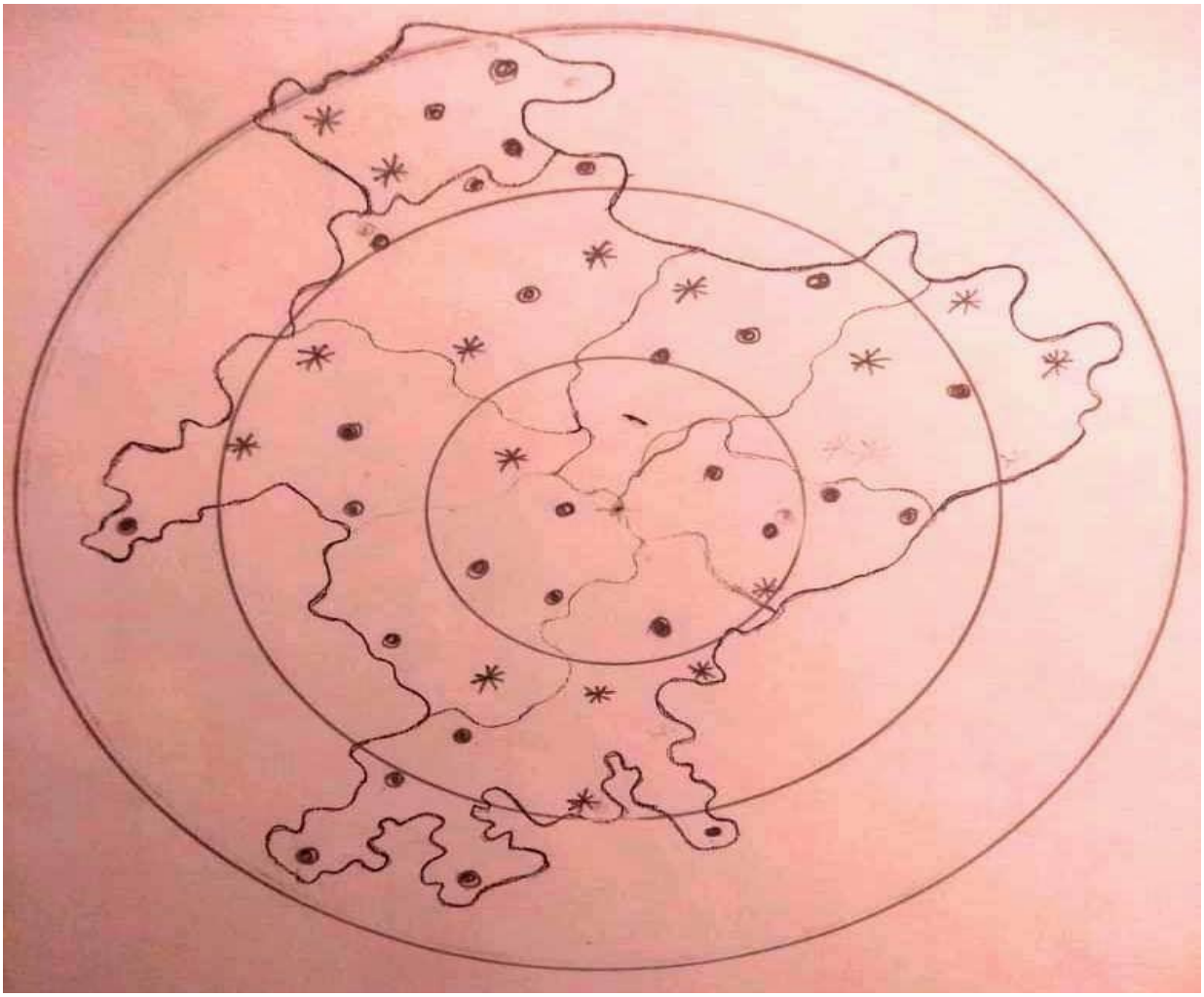

संकेत
' प्रस्तावित चक्रीय विपणन केन्द्र
० वास्तविक चक्रीय विपणन केन्द्र

प्रथम वृत्तः अर्न्तवर्तीः अध्ययन क्षेत्र के चक्रीय विपणन केन्द्रों का नियोजन वृत्तीय स्तर पर किया गया है। जिसमें प्रथम वृत्त अन्तवर्ती वृत्त के अर्न्तगत 21.42 प्रतिशत चयनित चक्रीय विपणन केन्द्र आते हैं। जिनमें विसण्डा, ओरन, अतर्रा, खुरहण्ड, महुआ तथा विलगांव है। जिले के क्षेत्रफल के मध्य में स्थित उपरोक्त चक्रीय विपणन केन्द्र क्षेत्र के विकास में महत्वपूर्ण योगदान रखते हैं।

द्वितीय वृत्तः मध्यवर्तीः मध्यवर्ती वृत्त के अन्तर्गत तिदंवारी, बबेरू, औगासी, मुरवल, कमासिन, सिंहपुर, नरैनी, गिरवॉ, तिंदवारा, बांदा तथा कोर्रही चक्रीय विपणन केन्द्र आते हैं। द्वितीय वृत्त में जिले के 39.29 प्रतिशत चक्रीय विपणन केन्द्र सम्मिलित है। उपरोक्त चक्रीय विपणन केन्द्रो की स्थिति अध्ययन क्षेत्र में सर्वाधिक विकासशीलल स्थिति में हैं।

तृतीय वृत्तः बाह्यवर्तीः समन्वित ग्रामीण विकास में चक्रीय विपणन केन्द्रों का महत्वपूर्ण योगदान है। जिले के सम्पूर्ण चयनित विपणन केन्द्रों को तीन वृत्तों में विभाजित कर अध्ययन किया गया है। बाह्यवती वृत जिले के सबसे बाहरी भाग में समाहित है, जिसमें जसपुरा, भुइंयारानी, सिंधनकला, चिल्ला, पैलानी, खप्टिहाकला, फतेहगंज, कालिंजर, करतल, शंकर बाजार तथा मटौंध चक्रीय विपणन केन्द्र चयनित किये गये हैं। जिसके 39.29 प्रतिशत विपणन केन्द्र बाह्यवर्ती वृत के अर्न्तगत सम्मिलित है। यह वृत जिले का सबसे पिछड़े क्षेत्र के अन्तर्गत आता है।

बांदा जिला के प्रस्तावित चक्रीय विपणन केन्द्रों का वृत्ताकार नियोजन

क्र.सं.	वृत्त	संख्या	चक्रीय विपणन केन्द्रों का नाम	प्रतिशत
1	अन्तवर्ती	02	हथौड़ा	12.5
2	अन्तवर्ती	–	गुढ़ाकला	
3	मध्यवर्ती	10	बेंदा	62.5
4	मध्यवर्ती	–	पपरेन्दा	–
5	मध्यवर्ती	–	बघेला	–
6	मध्यवर्ती	–	बिर्रावां	–
7	मध्यवर्ती	–	बदौसा	–
8	मध्यवर्ती	–	गुढ़ा	–
9	मध्यवर्ती	–	सढ़ा	–
10	मध्यवर्ती	–	नंदवारा	–
11	मध्यवर्ती	–	खैरादा	–
12	मध्यवर्ती	–	लुकतरा	–
13	बाह्यवर्ती	04	अमारा कुटी डेरा	25
14	बाह्यवर्ती	–	सिकहुला	–
15	बाह्यवर्ती	–	बीठा	–
16	बाह्यवर्ती	–	चरका	–
	कुल प्रस्तावित चक्रीय विपणन केन्द्रो सं0 16			100

प्रथम वृत्तः अर्न्तवर्तीः अध्ययन क्षेत्र के अन्तर्वर्ती वृत के अन्तर्गत 06 चक्रीय विपणन केन्द्र के वास्तविकता में आयोजित होते हैं और इसी वृत में 12.5 प्रतिशत चक्रीय विपणन केन्द्र और भी प्रस्तावित किये गये हैं जिससे क्षेत्र का समन्वित ग्रामीण विकास हो सके। उपरोक्त विपणन केन्द्रों के प्रस्तावित होने से क्षेत्र में शिक्षा का विस्तार तथा नवाचार का ज्ञान होगा।

द्वितीय वृत्तः मध्यवर्तीः जिले में सर्वाधिक 62.5 प्रतिशत चक्रीय विपणन केन्द्र प्रस्तावित है जिले के प्रस्तावित विपणन केन्द्रों में सर्वाधिक सं.10 है। उपरोक्त सारणी में प्रस्तावित विपणन केन्द्रों के आयोजन से क्षेत्र के समन्वित विकास में महत्वपूर्ण योगदान होगा तथा शिक्षा, स्वास्थ्य, परिवहन, मनोरंजन, इत्यादि में नवाचार के साधन उपलब्ध होगें।

तृतीय वृत्तः बाह्यवर्तीः शोध क्षेत्र के बाह्यवर्ती वृत में 04 चक्रीय विपणन केन्द्र प्रस्तावित है जिसमें जसपुरा वि0ख0 में अमारा कुटी डेरा तथा सिकहुला, कमासिन वि0ख0 में बीठा तथा चरका प्रस्तावित है। जिले में प्रस्तावित केन्द्रों के 25 प्रतिशत चक्रीय विपणन केन्द्र बाह्य वृत्त में प्रस्तावित है।

उपसंहारः इनके आयोजन से क्षेत्र के शैक्षिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक विकास में बृद्धि होगी तथा नवाचार का ज्ञान होगा। समन्वित ग्रामीण विकास के लिए चक्रीय विपणन केन्द्रों का विशेष महत्व है। समन्वित ग्रामीण विकास में कृषि एवं अन्य व्यापार प्रणाली के पुनर्गठन में निष्पक्ष और सदुपयोगी भूमिका निभाता है। चक्रीय विपणन केन्द्रों द्वारा बाह्य केन्द्रों से प्राप्त सुविधाओं को अपने बाजार प्रभाव क्षेत्र में वितरित करते हैं तथा साथ ही क्षेत्र में उत्पादित वस्तुओं की संग्रहण करके अन्य विपणन केन्द्रों को निर्यात करते हैं। अध्ययन क्षेत्र में चक्रीय विपणन केन्द्रों की अधिकता पायी जाती है जबकि कमासिन विकासखण्ड में केवल एकमात्र ही विपणन केन्द्र हैं। चक्रीय विपणन केन्द्रों के द्वारा प्राथमिक आवश्यकताओं की सम्पूर्ण वस्तुएॅ जैसे– खाद्यान्न, सब्जी, जूते–चप्पल, श्रंगार की वस्तुएॅ, बर्तन, दवाइयॉ तथा फल इत्यादि साप्ताहिक, द्विसाप्ताहिक चक्रीय विपणन केन्द्रों तथा मेलों के माध्यम उपलब्ध रहती है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. अरोरा, आर.सी.,1979,'समन्वित ग्रामीण विकास' एस.चॉद एवं कम्पनी,नई दिल्ली।
2. तिवारी, आर.सी.एण्ड मिश्र राधेश्याम,1995, 'इलाहाबाद जनपदः ग्रामीण विकास तथा सामाजिक परिवर्तन में स्थानिक वैषम्य,''भू विज्ञान, अंक 9–10 प्र0 23–39।
3. दुबे, बेचन तथा सिंह, मंगला, 1985,''समन्वित ग्रामीण विकास जीवन धारा प्रकाशन, वाराणसी।
4. पाठक,गणेश कुमार,1985''समन्वित ग्रामीण विकास में सेवा केन्द्रों की भूमिका(बलिया जनपद के विशेष सन्दर्भ में)'' भू–दर्शन अंक 18, सं.2 प्र. 31–38।
5. शुक्ला वी0डी0, 1981' इण्टीग्रेटेड एरिया डेवलपमेण्ट ऑफ तहसील हरदोई'' काशी वि0वि0 वाराणसी।
6. बांदा वैभव पुस्तक।
7. सांख्यिकीय पत्रिका बांदा 2017, 2018।
8. जनगणना पुस्तिका जिला बांदा 2011।